प्रकृति का भावुक और सूक्ष्म क्रॉनिकलर

वरुण शर्मा

एक बच्चे जैसी जिज्ञासा और उत्साह के साथ प्राकृतिक दुनिया को देखने का क्या मतलब है? आश्चर्य प्रकट करते हुए कोई इस तरह के अवलोकनों को सावधानीपूर्वक विस्तार से कैसे रिकॉर्ड करता है? शिक्षा प्राकृतिक दुनिया के साथ हमारे सम्बन्धों को कैसे आकार देती है? हम कुछ प्रजातियों को दूसरों की बजाय अधिक महत्त्व क्यों देते हैं? आइए एम. कृष्णन के जीवन और लेखन के माध्यम से इन्हीं और इन जैसे अन्य सवालों के जवाब खोजें।

"औसत शिक्षित वयस्क देश के पौधों और जानवरों के जीवन के बारे में बहुत कम या कुछ भी नहीं जानता है और कम ही परवाह करता है। पशुओं में उसे कोई दिलचस्पी नहीं होती है और दुनिया उसके लिए एक ऐसी जगह है जहाँ केवल मनुष्य रहते हैं। वह कभी भी पहाड़ों या कुत्तों के साथ दोस्ती नहीं कर सकता है और अगर उसके पास बात करने के लिए कोई न हो, पढ़ने के लिए कोई किताब न हो और खोलने-बन्द करने के लिए कोई गैजेट न हो तो वह काफ़ी अकेला हो जाता है। इन सबके लिए मूलतः स्कूली शिक्षा दोषी है - जहाँ विद्यार्थियों को प्रकृति को जानना और उसकी सराहना करना नहीं सिखाया जाता है, वे केवल किताबी नियम और उसकी व्याख्याओं में ही उलझे रहते है। दुर्भाग्यपूर्ण रूप से वे प्रकृति की महत्ता और उसकी आवश्यकता को न समझते हुए उसे केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने का माध्यम मानते हैं। और जब वे बड़े होते हैं, तो वे इस बात से अनजान रह जाते हैं कि वे जीवन की आधी ख़ुशी पाने से चूक गए हैं।"

– कृष्णन के 'नेचर स्टडी' नामक एक लेख से।

कृष्णन के लेख का यह अंश हमें शिक्षा और प्राकृतिक दुनिया के साथ विविधरंगी सम्बन्धों पर उनके विचारों से संक्षिप्त लेकिन अर्थपूर्ण परिचय करवाता है। प्रकृति के साथ उनके सम्बन्ध विलक्षण, भावनात्मक होने के साथ-साथ अनुभवजन्य भी थे (**बॉक्स-1 देखें**)।

औसत दर्ज़े का विद्यार्थी

माधवैया कृष्णन का जन्म 30 जून, 1912

बॉक्स-1 : शिक्षा पर कृष्णन के विचार

अपने निबन्ध 'नेचर स्टडी' में कृष्णन ने सीखने की 'संकेन्द्रित प्रणाली' की तीखी आलोचना की है। कृष्णन के अनुसार, *"यह एक शैक्षणिक दुस्साहस है कि विद्यार्थियों को एक ही चीज़ के बारे में अधिक-से-अधिक बार बताया जा रहा है, एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाने पर भी।"* उन्होंने इसे उस समय की हर अगली कक्षा की पाठ्यपुस्तकों में दिखने वाली गाय का उदाहरण देते हुए समझाया : *"पहले वर्ष बच्चा सीखता है कि गाय के चार पैर होते हैं (चौपाया जानवर है), वो हमें दूध देती है और घास खाती है (शाकाहारी)। अगले साल, शायद दूध पर एक पाठ है और दूसरा पाठ गाय के एक स्तनधारी पशु होने पर है। कक्षा-4 में बच्चे सीखते हैं कि गाय कैसे जुगाली करती है और उसका पेट कई हिस्सों में बँटा होता है।"* कृष्णन के अनुसार, यदि पाठ्यचर्या और शिक्षक प्राकृतिक दुनिया को समझने के किसी एक मॉडल या सिद्धान्त पर ही बने रहते हैं तो इस तरह कि त्रुटियाँ बार-बार हो सकती हैं। किसी भी स्थिति में इसी तरीक़े के परिणाम आते हैं और एक झूठे आत्म-विश्वास की भावना रहती है। कृष्णन का वैकल्पिक सुझाव था कि छोटे और बड़े विद्यार्थियों को अधिक-से-अधिक प्रकृति के बीच ले जाया जाए। उनके अनुसार शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों को वनस्पतियों और जीवों (flora and fauna) दोनों की प्रजातियों में और उनके बीच के सम्बन्धों का ख़ुलासा करना होना चाहिए। उनके अनुसार, *'विद्यार्थियों के लिए किताबें बनाने या चुनने में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किताबें सभी प्रकार की नैतिक शिक्षाओं से मुक्त होने के साथ रंगीन चित्रों वाली हों जिससे बच्चे उन किताबों से अपने आप जुड़ पाएँ।'*

कृष्णन ने यह भी सिफ़ारिश की कि स्कूलों में एक बग़ीचा हो जहाँ बाज़ार के लिए 'फल-सब्ज़ी उगाए जाएँ (market garden)', 'मुर्गीपालन किया जाए (poultry-run)', 'बकरियों के लिए बाड़ा (goat-pen)', 'कबूतरों का दड़बा (pigeon-loft)' और 'एक मध्यम आकार का स्कूल का कुत्ता (middle sized school dog)' होना चाहिए। उन्होंने जंगलों के नियमित परिभ्रमण का सुझाव दिया जो बहुत अनुशासनबद्ध न हो और उन शिक्षकों के नेतृत्व में हो जो स्वयं भी कुछ सीखने के इच्छुक हों। कृष्णन ने उसी निबन्ध में कहा, *"आख़िरकार, कोई भी पहले से यह नहीं जानता कि क्या दिखने वाला है और इस तरह के अध्ययन का अधिकांश महत्त्व बिना किसी पूर्व-निर्धारित योजना के है।"* इस स्थायी खुलेपन में एक बुनियादी उसूल है जिस पर कृष्णन ने अपने पूरे करियर में भरोसा किया - ज्ञान से प्रकृति को जकड़ने के प्रयास से बचना। इसके लिए, कृष्णन ख़ुद को और अपनी देखरेख में आने वाले लोगों (विद्यार्थी) को याद दिलाने में विश्वास रखते थे कि मनुष्य कभी भी प्रकृति पर महारत हासिल नहीं कर पाएगा। हम कितनी भी कोशिश कर लें, हम इसे अपनी ज्ञान प्रणालियों के दायरे में कभी नहीं रख पाएँगे। यह भावना कृष्णन की टिप्पणी में भी परिलक्षित होती है, *"प्रकृति सरल, तार्किक और तर्कसंगत नहीं है - भगवान का शुक्र है कि ऐसा नहीं है।"* इस लेख के माध्यम से कृष्णन ने प्रकृति की अवधारणा को महज़ अध्ययन की वस्तु से ऊपर असीम कल्पनाओं और आकर्षण के रूप में समझाया है।

को तिरुनेलवेली के एक साधारण तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ था (**चित्र-1 देखें**)। उनके पिता, ए. माधवैया, एक तमिल लेखक और सुधारक थे। कृष्णन आठ भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। अपने भाई-बहनों की तरह वे भी साहित्य और कला में गहरी रुचि के साथ

चित्र-1: एम. कृष्णन।
Credits: Asha Harikrishnan.
URL: https://www.mkrishnan.com/. License: Used with the permission of the rights owner.

बड़े हुए थे। 1920 के दशक की शुरुआत में, उनका परिवार मद्रास के एक भीड़भाड़ वाले इलाक़े से मायलापुर में उनके पिता द्वारा बनाए गए घर में रहने चला गया। यह क़दम निर्णायक साबित हुआ। मायलापुर जो आज एक कॉन्क्रीट के जंगल में तब्दील हो गया है, वहाँ उस समय धान के खेत, नारियल के पेड़ और हरे-भरे चरागाह हुआ करते थे। वहाँ घूमते हुए अक्सर कृष्णन को नेवले, पाम सिवेट (बिलाव), साँप, कछुए, विभिन्न प्रकार के पक्षी और काले हिरण भी मिल जाते थे।

उनकी प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दू हाई स्कूल में हुई थी। उनका अकादमिक कार्य साधारण था, पर उन्होंने व्यापक रूप से अन्य किताबें पढ़ीं और इस अवधि के दौरान साहित्य और कला में उनकी रुचि गहरी हो गई। 1927 में, कृष्णन ने अपनी इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए प्रेसीडेंसी कॉलेज, मद्रास में प्रवेश लिया। इसके तुरन्त बाद, वह इसके बीए कार्यक्रम में शामिल हो गए। इस दौरान, उनका परिचय विख्यात वनस्पतिविज्ञानी, प्रोफ़ेसर पी.एफ.फीसन से हुआ, जो दक्षिण भारतीय पहाड़ियों की वनस्पतियों को संकलित कर रहे थे। फीसन के कारण कृष्णन की रुचि जानवरों और पौधों के बीच बहु-आयामी परस्पर क्रिया में जगी। कृष्णन के शुरुआती अवलोकनों में से एक अवलोकन उनके बग़ीचे में सुशोभित पीले कनेर (yellow oleander) के अत्यधिक जहरीले अष्ठिल या गूदेदार फल (drupes) के प्रति एक कोयल के आकर्षण से सम्बन्धित था। कृष्णन उन पहले लोगों में से थे जिन्होंने बहुत आश्चर्य के साथ रिकॉर्ड किया कि *"कैसे कोयल चुपके से एक फल के पास जाती है और उसे अपनी चोंच से छेदती है, फिर उसके थोड़े गूदे (mesocarp) को खोदकर निकालती है, फिर सिर को ऊपर उछालकर उसे निगल जाती है जबकि कई अन्य पक्षी और गिलहरियाँ इस पौधे से दूर रहते थे।"*

कृष्णन की शैक्षणिक योग्यताएँ औसत थी। उन्होंने बीए और एमए दोनों में तीसरी श्रेणी प्राप्त की थी, इसलिए उनकी नौकरी

बॉक्स-2 : कृष्णन के प्रकृति लेखन का फ़ोकस

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कृष्णन की एकमात्र रुचि पशु प्रजातियों की विविधतापूर्ण भौतिक उपस्थिति में नहीं थी। बल्कि उनकी उतनी ही रुचि जीव-जन्तुओं की भावनात्मक स्थिति का आकलन करने में भी थी (**चित्र-2 देखें**)। एक तरफ़, वे मनुष्यों के कारण जानवरों को होने वाले किसी भी अवांछित दर्द-तकलीफ़ से प्रभावित होते थे। दूसरी ओर, जीव-जगत के भीतर हास्य, भय और प्रेम के क्षणों का निरीक्षण और उन्हें दर्ज करने में वो कभी चूकते नहीं थे। उन्होंने इसे *'भावनात्मक रिश्तेदारी'* के रूप में सन्दर्भित किया। उनके अनुसार, इस तरह की रिश्तेदारी को सांख्यिकीय रूप में दर्ज नहीं किया जा सकता, बल्कि उन जानवरों के साथ केवल एक भावनात्मक गहरे रिश्ते के माध्यम से इसका अध्ययन किया जा सकता था। इस प्रकार, उन्होंने वन विभाग के शिविर में दो हथिनियों रति और सुन्दरी के बीच की अटूट दोस्ती के बारे में बहुत प्रसन्नता से बताया। इन दोनों हथिनियों को प्रबन्धकों ने भी साथ रखना बुद्धिमानी समझा, *'किसी भावनात्मक उद्देश्य से नहीं बल्कि इसलिए, क्योंकि इससे काम प्रभावित होता है।'* उन्होंने यह भी देखा कि कैसे चीतलों के बीच विशिष्ट संचार में उनकी *'तिरछी नज़र'* (sideways glare) काम करती हैं। पक्षियों की चहचहाहट और गीतों में प्रकट होने वाली विभिन्न अभिव्यक्तियों और मनोदशाओं का मानचित्रण करते हुए उन्होंने पुष्टि की कि *'भले ही उनमें शक्तिशाली सहज ज्ञान होता है, लेकिन वे अत्यधिक भावनात्मक और जटिल प्राणी भी हैं।'* इनमें से प्रत्येक हिस्सा उस सहानुभूति का उदाहरण है जिसके साथ कृष्णन ने जानवरों की दुनिया में ख़ुद को डुबा दिया था।

यह भी उतना ही उल्लेखनीय है कि कृष्णन को इस तरह की सहानुभूति का अनुभव करने के लिए जंगल, चिड़ियाघर या राष्ट्रीय उद्यान तक जाने की आवश्यकता नहीं थी। इसके लिए उनके घर में रहने वाली एक मोटी बूढ़ी छिपकली भी पर्याप्त होती थी। ऐसे ही एक उदाहरण (नमूने) में उन्हें इस बात पर विचार करते हुए पाया गया कि कैसे छिपकली की पूँछ *'भावनात्मक अभिव्यक्ति के अंग'* के रूप में अपनी सापेक्ष *'आवाज़हीनता'* की भरपाई करती है। उन्होंने अपने बग़ीचे में पक्षियों के साथ-साथ मेंढकों (toads) का भी उत्साहपूर्वक स्वागत किया। बैंडिकूट (एक प्रकार का बड़ा चूहा) ने भी जिज्ञासा जगाई। किसी वक़्त जब मायलापुर में बारिश होती थी तो वे यह देखने के लिए बाहर निकलते थे कि पक्षी, गिलहरियाँ और बन्दर इसे कैसे सहन कर रहे हैं। आज भी, ऐसे पर्यावरणविद ढूँढ़ना मुश्किल होगा जो कृष्णन की तरह जंगली जानवरों और उनके शहरी समकक्षों दोनों के बारे में उतनी ही लगन से लिखते हों।

पीछे मुड़कर देखें तो कृष्णन के लेखन में मानवरूपता (यानी ग़ैर-मानवीय जानवरों में मानवीय गुणों का गुणगान करने की प्रवृत्ति) का कुछ ख़तरा देखा जा सकता है। फिर भी, इन लेखों के माध्यम से कृष्णन ने मनुष्यों और सभी प्रकार के जानवरों - बड़े-छोटे, निकट के और दूर के, आकर्षक और परिया (pariah) के बीच अन्तरजातीय साहचर्य के लिए नैतिक ही नहीं, बल्कि एक उच्च मानक स्थापित किए।

चित्र-2 : एक छोटी और अब दुर्लभ, माउस डियर मादा। कृष्णन का मानना था *'कि छोटी प्रजातियों के साथ भी जीवित, संवेदनशील प्राणियों को एक बड़े पैमाने पर अनुकूलित सजगता और सहज प्रतिक्रियाओं के रूप में मानना पूरी तरह से व्यर्थ है।'*

Credits: M Krishnan. Taken from M Krishnan (1965). 'Letter from M Krishnan'. Cheetal: 7 (2): 10-11. Published by the Wild Life Preservation Society of India (https://wpsidoon.org/).

की सम्भावनाएँ कम थीं। अपने परिवार के आग्रह पर उन्होंने 1936 में कानून की डिग्री प्राप्त की, लेकिन उनका वकील के तौर पर कार्य करने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। एक अदालत में एक छोटा एपेरेंटीसशिप कोर्स करने के बाद उन्होंने एसोसिएटेड प्रिंटर्स और मद्रास स्कूल ऑफ़ आर्ट में एक कलाकार के रूप में काम किया। 1937 में, कृष्णन ने एक स्वतंत्र लेखक के रूप में काम करना शुरू किया और समाचार पत्रों में प्रकृति से सम्बन्धित नोट्स प्रकाशित किए। 1942 में, एक सिफ़ारिश ने कृष्णन को सन्दूर के महाराजा के यहाँ काम दिलाने में मदद की। वे आठ साल तक सन्दूर में रहे, जो अब बेल्लारी (कर्नाटक) में पड़ता है। इस अवधि के दौरान कृष्णन ने महाराजा के लिए एक स्कूल शिक्षक, न्यायाधीश, प्रचार अधिकारी और राजनीतिक सचिव के रूप में कार्य किया। ये नौकरियाँ उनके लिए बिल्कुल भी रोमांचक नहीं थीं। हालाँकि, सन्दूर के विशाल अन्दरूनी इलाक़ों ने उन्हें भ्रमण के कई अवसर दिए और इस कार्यकाल के दौरान उनकी उत्कृष्ट लेखनी सामने आई। ऐसे ही एक लेख में कृष्णन ने

बॉक्स-3 : कृष्णन के सवाल

यहाँ कुछ अन्य उदाहरण दिए गए हैं कि कृष्णन अपने पाठकों से किस प्रकार के प्रश्न पूछते थे :

- क्या प्रेम और इलाक़े से परे ऐसे कारक हैं जो पक्षियों को गाने के लिए प्रेरित करते हैं?
- क्या बन्दर स्नेहवश गले मिलते हैं?
- क्या गौर (gaur), जो बारिश के आने की गन्ध सूँघ सकते हैं, ज़मीन की गन्ध तीव्र महसूस करते हैं?
- क्या हाथी आयोडीन की पूर्ति के लिए कभी-कभी जलकुम्भी खाते हैं?

क्या आपके पास ऐसे ही कुछ प्रश्न हैं जिन्हें आप इस सूची में जोड़ सकते हैं?

आश्चर्य व्यक्त किया कि कैसे बेल्लारी के ग्रामीण इलाक़ों ने सितम्बर और अक्टूबर में हजारों गुलाबी स्टारलिंग (Pastor roseus) को अपनी तरफ़ आकर्षित किया। यह बात तो समझ आती है कि कि ये पक्षी उन क्षेत्रों की ओर आकर्षित होंगे जो फ़सलों और फलों से समृद्ध होंगी; लेकिन इसकी बजाय, वे उन छोटे क्षेत्रों में चले गए थे जहाँ ये दोनों ही नहीं थे। इस असामान्य पैटर्न का क्या कारण हो सकता है? कृष्णन ने इस प्रश्न के साथ अपना वह लेख समाप्त किया।

उल्लेखनीय प्रकृतिवादी और लेखक

1949 में, सन्दूर ने स्वतंत्र भारत में अपनी रियासत का दर्जा खो दिया; और कृष्णन मद्रास में अपने पिता के घर लौट आए। इसी दौर में वे एक स्वतंत्र लेखक, प्रकृतिवादी और फोटोग्राफ़र के रूप में उभरे। 1950 में, कृष्णन ने कलकत्ता के *द स्टेट्समैन* के पन्नों में 'कंट्री नोटबुक' नामक एक पाक्षिक स्तम्भ लिखना शुरू किया, जिसे उन्होंने 46 वर्षों तक चलाया। उन्होंने *द हिन्दू*, *द इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ़ इंडिया* और *द इंडियन एक्सप्रेस* जैसे अन्य समाचार पत्रों के लिए भी लिखना जारी रखा। इस दौरान कृष्णन ने कला, कहानियों, क्रिकेट और साहित्यिक इतिहास सहित विभिन्न विषयों पर लिखा, लेकिन उनके सबसे उल्लेखनीय लेख नेचुरल हिस्ट्री पर थे (**बॉक्स-2 देखें**)।

इस समय तक, फीसन के मार्गदर्शन में एक औसत कॉलेज विद्यार्थी एक अनुभवी प्रकृतिवादी के रूप में विकसित हो चुका था। कृष्णन को अलग करने वाली चीज़ों में से एक यह है कि उन्होंने प्रायद्वीपीय भारत के परिदृश्य और वन्यजीवों पर ध्यान केन्द्रित

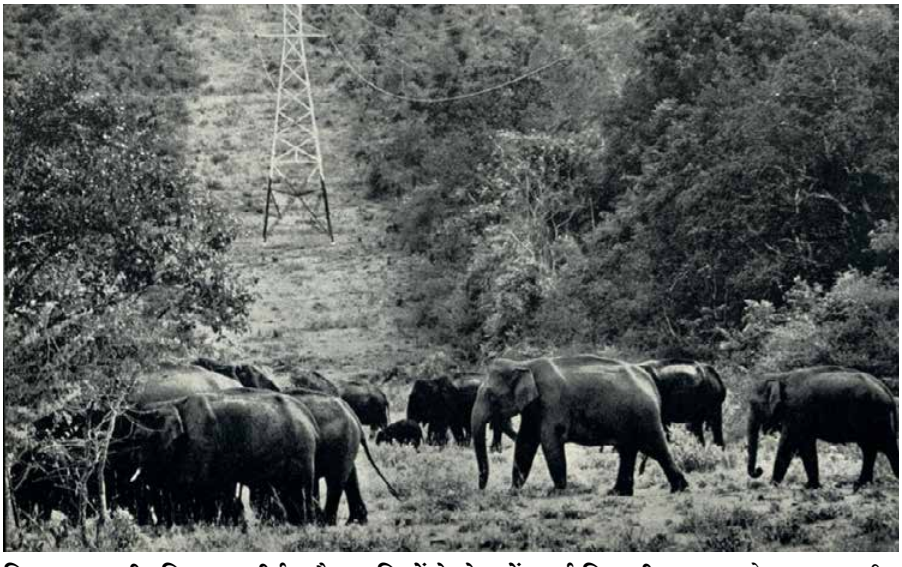

चित्र-3 : **तस्वीर जिसका शीर्षक है, 'हाथियों के देश में आई बिजली'।** कृष्णन के पास वन्यजीव संरक्षण के लिए एक सरल कहावत थी, *"अच्छा है, अकेला छोड़ दो"*।
Credits: M Krishnan. Taken from M Krishnan (1965). 'Letter from M Krishnan'. Cheetal: 7 (2): 10-11. Published by the Wild Life Preservation Society of India (https://wpsidoon.org/).

बॉक्स-4 : हाथियों के पक्ष में

दुर्भाग्य से, कृष्णन के कई समकालीन अपने समय की भावना से ऊपर नहीं उठ पाए। प्रकृतिवादियों, वन अधिकारियों और प्रशासकों के एक गुट ने विवादास्पद रूप से तर्क दिया कि हाथी जंगलों के लिए विनाशकारी थे। उन्होंने सुझाव दिया कि यह हाथियों के चरित्र में था कि वे तेज़ी से बढ़ते हैं, इलाक़ों को बर्बाद करते हैं और अपने प्रवास के मार्ग पर आने वाले पेड़ों और नवांकुर या नन्हें पौधों को उखाड़ देते हैं। कृष्णन ने बारीक़ी से इस तरह के बकवास विचारों का ख़ुलासा किया। कुछ लोग तो विकास की जगह बनाने के लिए हाथियों की योजनाबद्ध हत्या को नज़रअन्दाज़ करने की हद तक चले गए। कृष्णन ने इसका विरोध करते हुए दिखाया कि कैसे इस तरह के उपायों ने चीज़ों को बदतर बना दिया है। जो हाथी बन्दूक की गोलियाँ खाकर बच गए और उन्हें खुले, सड़ते और कीड़ों से भरे घावों के साथ छोड़ दिया गया तो वे मानव समाज के लिए दोगुने शत्रु बन गए। कृष्णन की दलीलों को अक्सर अनसुना कर दिया जाता था।

1970 के दशक की शुरुआत में, इंटरनेशनल यूनियन ऑफ़ कंजर्वेशन (International Union of Conservation — IUCN) की ओर से प्रस्तुत एक रिपोर्ट के एक हिस्से में, वैज्ञानिक आर.एच. वालर ने हाथियों, ख़ासकर वायनाड (केरल) के क्षेत्र के हाथियों के सम्बन्ध में कई अपमानजनक टिप्पणियाँ की। IUCN की ख्याति को देखते हुए, इन निष्कर्षों को दूसरों द्वारा चुनौती नहीं दी गई थी। लेकिन कृष्णन उन पर टूट पड़े। 1968 में, कृष्णन को वायनाड के कुछ हिस्सों सहित प्रायद्वीपीय भारत में स्तनधारियों के विस्तृत-व्यापक पारिस्थितिक सर्वेक्षण का समर्थन करने के लिए जवाहरलाल नेहरू फैलोशिप से सम्मानित किया गया था। इस अध्ययन के निष्कर्षों को 1971 में बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (Bombay Natural History Society — BNHS) द्वारा 'इंडियाज़ वाइल्डलाइफ' (India's Wildlife) नामक एक मूल्यवान पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया था। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस फैलोशिप के लिए कृष्णन के फील्डवर्क ने यह दिखाने में मदद की कि हाथियों के विनाश का कारण - *"गहन, विविध और निरन्तर मानवीय हस्तक्षेप का सरल और अपरिहार्य परिणाम था।"*

बॉक्स-5 : जैसा जंगलों में, वैसा शहरों में भी

दिलचस्प बात यह है कि जैसे-जैसे कृष्णन का रुतबा बढ़ता गया, उनकी चिन्ताएँ जंगलों तक ही सीमित नहीं रहीं। उनकी चिन्ताओं की तात्कालिकता ने सक्रियता का रूप ले लिया, जिसमें शहरी पारिस्थितिकी, घरेलू जानवर और '*परिया* (pariah)' प्रजातियाँ शामिल थीं। इसलिए, उदाहरण के लिए, वे ट्रैक्टरों के उपयोग के कारण अमृत महल बैलों जैसे पशुधन की स्वदेशी क़िस्मों के लुप्त होने से चिन्तित थे। वे अपने शहर, जहाँ उनका घर था, में जानवरों पर होने वाले अत्याचार से परेशान रहते थे। उन्हें यह देखकर दुख हुआ कि बोझ ढोने वाले जानवरों, ख़ासकर गधों से किस तरह बेरहमी से अत्यधिक काम लिया जाता था और उनकी बहुत कम देखभाल की जाती थी। इसी तरह, उन्होंने नगरपालिका क्षेत्रों में 'आकर्षक और अबाधक पक्षियों जैसे ओरिओल्स (orioles) और फ्लाईकैचर (flycatchers) को प्रोत्साहन देने के लिए' कौओं को ख़त्म करने के राष्ट्रीय पक्षी संरक्षण समिति के प्रस्ताव को ख़ारिज कर दिया था। उन्होंने इस प्रस्ताव के विरोध में तर्क दिया कि शहरों में हरियाली बढ़ाने से ये आकर्षक पक्षी स्वयं ही आ जाएँगे और कौवों की सामूहिक हत्या की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इसी तरह, उन्होंने अपने एक लेख में भारतीय 'आवारा' कुत्तों (street dogs) का पक्ष लेते हुए सुझाव दिया कि *"इनसे बेहतर कोई घरेलू (पालतू) कुत्ते नहीं हैं। यह बहुत चतुर और अनुकूल हैं; आप इन्हें व्यावहारिक रूप से कुछ भी सिखा सकते हैं।"*

करना चुना। एक और ख़ास विशेषता यह थी कि उन्होंने अध्ययन के अपने ख़ुद के तरीक़े विकसित किए थे। उदाहरण के लिए, उनके पास प्राकृतिक दुनिया का अवलोकन करने के लिए निर्मित विशेष उपकरण थे। इसमें एक टोपी और एक पर्दानुमा या घूँघट वस्तु शामिल थीं जिन्हें वे जानवरों से अपनी पहचान छिपाने के लिए पहनते थे। उनके अपने शब्दों में, *"स्थिर रहने और धीमी गति से चलने का कौशल मैंने कई वर्षों की कोशिश के बाद हासिल किया था।"*

बॉक्स-6 : स्कूल पुस्तकालयों के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण संसाधन

इन तीन पुस्तकों में कृष्णन के कुछ लेख शामिल हैं :

- शान्ति और आशीष चन्दौला की किताब *Of Birds and Birdsong*, जो 2014 में अलेफ़, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई थी। इसकी भूमिका प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी ज़फर फतेह अली ने लिखी है।
- रामचन्द्र गुहा द्वारा कृष्णन के लेखों का संकलन, *Nature's Spokesman : M Krishnan and Indian Wildlife*, जो 2007 में पेंगुइन बुक्स ने प्रकाशित किया था।
- BNHS मुम्बई से दो खण्डों में प्रकाशित कृष्णन का संग्रह, *India's wildlife* in 1959-70',.

BNHS के जर्नल (या JBNHS) में प्रकाशित कृष्णन के कुछ लेख वर्तमान सम्पादक को अनुरोध करके प्राप्त किए जा सकते हैं :

- कृष्णन (1952). 'Koels eating the poisonous fruit of the Yellow Oleander'. JBNHS, 50 (4): pg. 943-945;
- कृष्णन (1955). 'The Rosy Pastor in the Bellary Area'. JBNHS, 53 (1): pg.128;
- कृष्णन (1974). 'RH Waller's observations on wildlife in India: a partial rejoinder'. JBNHS, 71 (3): pg. 594-598;
- कृष्णन (1978). 'Disconnected observations on a species of *Scolapendra*. JBNHS, 75 (1), pg. 239-240; और,
- कृष्णन (1978). 'Emotive kinships amongst animals'. JBNHS, 75 (3), pg. 613-618.

1950 के दशक की शुरुआत में द *स्टेट्समैन* में प्रकाशित कृष्णन के कुछ लेखों को नए सिरे से डिजिटल किया गया है। इन्हें यहाँ पढ़ा जा सकता है : https://www.mkrishnan.com/uploads/1/1/2/5/112547211/1950-54_cn.pdf.

बॉक्स-7 : विचार करने योग्य कुछ प्रश्न

प्रश्न : कृष्णन ने स्कूली पाठ्यक्रम में गाय के विषय को लेकर अपनाई गई रणनीति के माध्यम से सीखने की संकेन्द्रित प्रणालियों को चित्रित किया है। क्या आप ऐसे किसी अन्य उदाहरण के बारे में जानते हैं? एक का वर्णन करें।

प्रश्न : अपने आस-पास के किसी ऐसे जानवर के बारे में सोचें जिसमें आपकी रुचि हो। इसकी किसी भी विशेषता का यथासम्भव विस्तार से वर्णन करते हुए एक नोट लिखें।

प्रश्न : एक समकालीन प्रकृतिवादी के बारे में सोचें जिनकी संवेदनशीलता जंगली और घरेलू जानवरों दोनों के प्रति विस्तृत है। उनकी एक संक्षिप्त जीवनी लिखें।

प्रश्न : क्या आप पाँच लुप्तप्राय प्रजातियों की सूची बना सकते हैं जो बाघों और हाथियों की तरह आकर्षक नहीं दिखती हैं? इन प्रजातियों को उजागर करने के लिए एक कोलाज बनाने का प्रयास करें।

प्रश्न : वर्तमान विकास परियोजनाएँ हाथी पर कैसे प्रभाव डाल रही हैं? अपने निकटतम हाथियों के आवास में इसका अध्ययन करें।

एक और अनूठा पहलू उनकी शैली थी। कृष्णन का लेखन सूक्ष्म विवरणों से समृद्ध था जो उनके स्वयं के अवलोकनों और फील्डवर्क से आता था। उनके प्रत्येक लेख में अक्सर उनके स्वयं के पेन और स्याही से बनीं कलाकृति या उत्कृष्ट तस्वीरें (photographs) होती थीं। कृष्णन के गहन चिन्तन में बच्चों जैसा विस्मय और उनके लेखन की भाषा को नज़रअन्दाज़ करना असम्भव है। लेकिन, इससे भी अधिक कृष्णन के लेखों की जो विशिष्टता थी, वह थी उनकी अन्वेषण की भावना। जैसा कि कोयल और रोज़ी स्टारलिंग के लेख में दिखता है, कृष्णन सवाल उठाने और एक रहस्यपूर्ण राह पर चलने के इच्छुक रहे, भले ही उनके कोई अन्तिम उत्तर न मिले (**बॉक्स-3 देखें**)। इसका इस तथ्य से कुछ लेना-देना हो सकता है कि वे अपने ख़ाली समय में जासूसी उपन्यास पढ़ने का आनन्द लेते थे और अनसुलझे रहस्य उन्हें परेशान

नहीं करते थे। दिलचस्प बात यह है कि इन सवालों को पूछते समय, कृष्णन सभी के जवाब देने के लिए स्वयं को बाध्य नहीं समझते थे। बल्कि ऐसा लगता है कि यह पाठक को दिलचस्प तथ्यों की एक गली में ले जाने की उनकी रणनीति का एक हिस्सा था और फिर उन्हें बढ़ती जिज्ञासा के साथ छोड़ देना था, जो अब तक उनकी अपनी जिज्ञासा बन गई होती थी।

साहसी संरक्षणवादी

1959 में, एक छात्रवृत्ति की बदौलत कृष्णन को देश भर का दौरा करने का अवसर मिला। यह राष्ट्र-निर्माण के शुरुआती चरण का समय था, जब बड़े बाँधों, खनन परियोजनाओं, रेलवे लाइनों, सड़कों, प्लांटेशन और कृषि के विस्तार का बड़े पैमाने पर काम हो रहा था। कई लोगों के विपरीत, कृष्णन इन सभी पर मोहित नहीं थे। उन्होंने साहसपूर्वक इन परियोजनाओं, जो अपने क्षेत्रों पर वन्यजीवों की सम्प्रभुता का सम्मान करने में पूरी तरह विफल थी, को चलाने वाली देशभक्ति की भावना पर सवाल उठाया (**चित्र-3 देखें**)।

उनकी अधिकांश चिन्ताएँ हाथी के इर्द-गिर्द घूमती रहीं। वन्यजीवन को सामान्य रूप से नुक़सान उठाना पड़ा; पक्षी, बिल्ली (Felidae) कुल और अन्य छोटे जानवर उन्नत होती हुई सभ्यता के सम्पर्क से जिस हद तक बचने में क़ामयाब रहे वह हाथी के लिए सम्भव नहीं था। एक बड़ा और लम्बे समय तक जीवित रहने वाला जानवर होने के कारण हाथी का मनुष्यों के साथ संघर्ष बढ़ना ही था। हाथी अपने आवास और उसके गलियारों से गहराई से जुड़ा हुआ है और अपने जीवनकाल में एक फैले हुए इलाक़े में घूमता है। (**बॉक्स-4 देखें**)।

भारत ने 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर लॉन्च किया। यह भारतीय बाघ के संरक्षण के लिए एक बहु-प्रतीक्षित, केन्द्र प्रायोजित योजना थी जो अब भी है। कृष्णन, जो इस परियोजना की संचालन समिति के संस्थापक सदस्य थे, ने इस बात से इंकार नहीं किया कि बाघ और उसके शिकारी जानवरों के लिए भूमि आरक्षित करने से हाथियों को राहत मिलेगी। हालाँकि, इसने उनकी दूसरी चिन्ता जगा दी : *"जब बाघ, जो लगभग 200 सालों तक भारत के मनुष्यों के दिलो-दिमाग़ पर छाया रहा, उसकी आबादी में कमी, पर लोगों का ध्यान एकदम अन्तिम चरण में गया था तो फिर यह तो तर्कसंगत है कि कम आकर्षक जानवरों, जैसे — शेर जैसी पूँछ वाले मकाक (lion -tailed macaque), काला रीछ (sloth bear), लकड़बग्घा, भेड़िया और छोटी भारतीय लोमड़ी की संख्या में कमी पर काफ़ी हद तक ध्यान नहीं दिया गया होगा।"* समय के साथ, कृष्णन ने वाटर मॉनिटर (water monitors) और जंगली कुत्तों जैसी प्रजातियों को इस सूची में जोड़ा और साथ ही ब्लैकबक और तेंदुए के 'स्थानीय विलुप्त होने' से सम्बन्धित सम्भावनाओं को चिह्नित किया। ऐसा करते हुए कृष्णन ने उस सम्भावना का अनुमान लगाया होगा जिसे आज 'मूक विलुप्ति' कहा जाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके तहत 'आकर्षक' प्रमुख प्रजातियों के लिए हमारी प्राथमिकता, हमें छोटी और कम आकर्षक प्रजातियों से दूर कर सकती है जो स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र के लिए उतनी ही महत्त्वपूर्ण हो सकती हैं (**बॉक्स-5 देखें**)।

चलते-चलते

वन्यजीव संरक्षण पर उनके काम की सराहना में, कृष्णन को 1970 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। 1995 में, कृष्णन को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) के ग्लोबल 500 रोल ऑफ़ ऑनर - उनके शब्दों में - "भारत की जंगली वनस्पतियों और जीवों की लगातार ख़त्म हो रही अद्भुत विरासत के बारे में लोगों को सूचित करने और उनमें दिलचस्पी जगाने की कोशिश में लगभग आधी सदी के निरन्तर प्रयास" के लिए नामित किया गया। वे अपने पीछे एक ऐसी विरासत छोड़ गए हैं जिसे उनके और उनके कामों पर रचे गए साहित्य से खोजा जा सकता है (**बॉक्स-6 देखें**)।

प्रकृति के इस विद्यार्थी का जीवन और कार्य प्राकृतिक दुनिया को लिपिबद्ध करने और संरक्षित करने में अथक जिज्ञासा और गहरी संवेदनशीलता की भूमिका के कई उदाहरण प्रस्तुत करता है (**बॉक्स-7 देखें**)। जैसा कि कृष्णन हमें याद दिलाते हैं, "केवल प्रकृति की महान विरासत जो हमारे पास है, उसमें हमारी युक्ति, बुद्धि या कल्पना का कोई योगदान नहीं है और यह हमारी रचनात्मक प्रतिभा से परे है, हालाँकि हमारे पास अभी भी इसे नष्ट करने की शक्ति है।"

मुख्य बिन्दु

- एम. कृष्णन का जीवन और कार्य प्राकृतिक दुनिया को लम्बे समय तक बनाए रखने और संरक्षित करने में अथक जिज्ञासा और गहरी संवेदनशीलता की भूमिका के कई उदाहरण प्रदान करता है।
- एक विद्यार्थी के रूप में, स्कूल और कॉलेज में उनका शैक्षिक रिकॉर्ड औसत था। हालाँकि, उन्होंने ख़ूब पढ़ा और वन्य जीवन और कला में गहरी रुचि विकसित की।
- वनस्पति विज्ञानी प्रोफ़ेसर पी.एफ. फीसन के मार्गदर्शन में अध्ययन करने के अवसर ने इस औसत विद्यार्थी को पौधों और जानवरों के बीच बहु-आयामी पारस्परिक क्रिया को देखने के काबिल एक अनुभवी प्रकृतिवादी के रूप में विकसित होने में मदद की।
- विभिन्न प्रकार की नीरस नौकरियों को करने के बाद, कृष्णन ने एक स्वतंत्र लेखक, प्रकृतिवादी और फोटोग्राफ़र के रूप में अपना जीवन यापन करना चुना।
- अपने लेखन के माध्यम से, कृष्णन ने मनुष्यों और सभी प्रकार के जानवरों - बड़े-छोटे, निकट-दूर, आकर्षक और 'परिया' के बीच अन्तरजातीय साहचर्य के लिए, नैतिक ही नहीं, एक उच्च मानक स्थापित किया।
- एक संरक्षणवादी के रूप में, कृष्णन ने स्वतंत्र भारत में विकास परियोजनाओं (जो अपने क्षेत्रों पर वन्यजीवों की सम्प्रभुता का सम्मान करने में पूरी तरह विफल थीं) को चलाने वाली देशभक्ति की भावना पर सवाल उठाने में साहस दिखाया।
- कृष्णन ने विद्यार्थियों को प्राकृतिक दुनिया की ख़ुशियों से परिचित कराने में स्कूली शिक्षा की भूमिका पर सवाल उठाया। उन्होंने देश में पौधों और पशु जीवन के लिए विद्यार्थियों की जिज्ञासा और देखभाल को जोड़ने के लिए महत्त्वपूर्ण दार्शनिक और व्यावहारिक संकेत देने की पेशकश की।

टिप्पणियाँ :

1. ऐसा माना जाता है कि शब्द 'परिया' मूल रूप से दक्षिण भारत की एक स्वदेशी जनजाति के सदस्य को सन्दर्भित करता है, जो शादियों और अन्त्येष्टि आदि के समय ड्रम बजाते थे (जिन्हें पारई कहा जाता है)। यह जल्द ही एक जातिवादी गाली में बदल गया। जिस समय कृष्णन रहते थे और लिखते थे, उस समय इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था, तब से इसके अपमानजनक अर्थों के बारे में हमारी जागरूकता बढ़ी है। जब ग़ैर-मानव जानवरों के सन्दर्भ में इसका उपयोग किया जाता है तो इसके कई अर्थ हो सकते हैं, जिनमें 'मूल', 'मुक्त' से लेकर 'बाहरी', 'सामान्य या साधारण', 'नीरस या अनाकर्षक', 'मेहतर', 'बहिष्कृत' या इनमें से कुछ संयोजन शामिल है। इस लेख में इस शब्द को केवल इसलिए नहीं रखा गया है क्योंकि कृष्णन की इनमें रुचि थी और उनके लेखों ने इस शब्द के अधिक अपमानजनक उपयोगों से जुड़ी आम धारणाओं को ख़ारिज कर दिया, बल्कि इसलिए भी क्योंकि उनकी टिप्पणियों और लेखन ने इनमें से कई धारणाओं को चुनौती देने और बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
2. Source of the image used in the background of the article title: Indian elephants in a stream. Credits: PickPik. URL: https://www.pickpik.com/elephants-family-group-river-wildlife-nature-mammal-5110. License: Royalty Free

For further reading:

1. Bittu Sehgal (2017). 'M Krishnan: In Remembrance and Gratitude'. Nature in Focus. URL: https://www.natureinfocus.in/environment/in-remembrance-and-gratitude.
2. Kumaran Sathasivam. 'The national treasure that was M Krishnan'. Madras Musings. (Archive) Vol. XXII No. 14, November 1-15, 2012. URL: https://madrasmusings.com/Vol%2022%20No%2014/the-national-treasure-that-was-m-krishnan.html.

वरुण शर्मा ने दिल्ली विश्वविद्यालय से सामाजिक कार्य में पीएचडी की है। उनके शोध का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से देखे गए मानव-पशु सम्बन्धों से सम्बन्धित है। उन्हें प्रसिद्ध और विस्मृत किए गए प्रकृतिवादियों की जीवनियाँ अत्यन्त ज्ञानवर्धक लगती हैं। उनसे varunwaters@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत' **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय